ISSN 2231-5063 Impact Factor : 3.4052(UIF) Volume - 5 | Issue - 10 | April - 2016

Golden Research Thoughts

GRT

काव्य में अलंकार

बागवान नौशाद महंमद

तृतीय वर्ष कला , हिंदी , मु.सा काकडे महाविद्यालय सोमेश्वरनगर

ता-बारामती जि-पुणे.

प्रस्तावना

काव्य में अलंकार का महत्व अनन्य साधारण होता है। काव्य के मुख्य दो पक्ष होते है 1.अनुभूति पक्ष 2.अभिव्यक्ति पक्ष इसे दूसरे शब्दों में आंतरिक पक्ष या भावपक्ष और बाहयपक्ष या कलापक्ष कह सकते है। कलापक्ष का मुख्याधार अलंकार , छंद , भाषाशैली ,बिंब आदि होते हैं इस सब में अलंकार का महत्व अत्याधिक होता है। इसे ही प्रस्तुत शोध निबंध में प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है।

अलंकार शब्द का व्युत्पतिपरक अर्थ :-

अलंकार शब्द की व्युत्पत्ति 'अलं + कार' शब्दों के योग से हुई है। जिसका अर्थ है भूषित करने वाला। इसमें 'अलं' का अर्थ है आभूषण , शोभा । 'कार' का अर्थ करने वाला यानि काव्य को अलंकृत करने वाला अथवा शोभा बढानेवाला उपकरण अलंकार है । व्यवहार में भी कोई स्त्री अपने सौंदर्य को बढाने के लिए आभूषण का प्रयोग करती है। व्यवहार में जिस तरह सौंदर्य वृद्धि करने वाले उपकरणों को अलंकार कहते है , उसी तरह काव्यशास्त्र में भी अलंकार शब्द का प्रयोग काव्य के सौंदर्य वृद्धि करने वाले गुणों के लिए होता है।

काव्य में अलंकार का स्थान इस विषय पर भारतीय आचार्यो के विचार:-

1. भामह :-

अपने मूल रूप में काव्य कितना भी सुंदर क्यों हो, फिर भी वह अलंकारों के बिना उसी तरह सुशोभित नहीं होता जिस तरह अलंकारों के बिना किसी रमणी का सुंदर मुख सुशोभित नहीं होता, फिका फिका ही लगता है।

2. जयदेव :-

जयदेव के अनुसार जिस तरह शीतल अग्नि की कल्पना करना भी मूर्खता है, उसी तरह अलंकार रहित काव्य की कल्पना भी नही की जा सकती। जहॉ अग्नि है वहॉ उष्णता है, उसी प्रकार जहॉ काव्य है, वहॉ अलंकार है।

जिस प्रकार कोई कामिनी अपना सौंदर्य बढाने के लिए पायल, बिछिया, कंगना, झुमका रत्नों का हार आदि पहनती है उसी प्रकार कवि कविता को अधिक सुंदर ,रसवान बनाने के लिए उपमा ,यमक, श्लेष ,अनुप्रास आदि का प्रयोग करता है।

अलंकार की परिभाषाएँ :-

1. आचार्य दंडी :-

"काव्य शोभाकरान धर्मानलंकारान प्रचक्षते। "

अर्थात काव्य को सुशोभित करने वाले अलंकार कहते है।

2. आचार्य वामन :-

"अलंकारोतीति अलंकार "

अर्थात जो अलंकृत सुशोभित करता है वह अलंकर है।

अलंकार स्वाभाविक रूप में मनुष्य को आकर्षित होना उसका जन्मजात स्वभाव है। मनुष्य केवल सुदंर दिखना नही चाहता तो अपने आप को सुंदर ढंग से अभिव्यक्त करना चाहता है जो उसे अलंकारों की जरूरत महसूस होती है।

काव्य में अलंकार का महत्व :-

जिस प्रकार सामान्य जीवन में अलंकारों का महत्व होता है उसी प्रकार काव्य में भी अलंकारों का प्रयोग महत्वपूर्ण होता है। कोई कामिनी अलंकारों से अलंकृत होकर सहदय को मोहित करती है। उसी प्रकार अलंकारों से प्रयुक्त काव्य भी पाठकों का मन मोहित करता है।

अलंकारों का उचित प्रयोग किसी के भी सौंदर्य में चार चॉद लगा देता है। उसी प्रकार काव्य को सुंदर बनाने के लिए कवि अलंकारों का प्रयोग करता है। अलंकारों के प्रयोग से हम अपनी बात को प्रभावी रूप से व्यक्त करते है।

जैसे किसी की सुंदरता व्यक्त करने के लिए कहा जाए 'तुम बहुत सुंदर हो ' इस बात से मन प्रभावित नहीं होता आंदोलित नहीं होता परंतु यदि कोई कहे कि – 'वह इतनी सुदंर है कि उसका सौंदर्य पाने के लिए कमल जल में तपस्या करने लगा और चंद्रमा लज्जित होकर आकाश में जा बैठा। '

तो यह बात निश्चित ही सुनने वाले के मन में आदोंलन पैदा करती है। इसी कारण आलंकरवादी आचार्य काव्य में अलंकारो का स्थान अनिवार्य मानते थे इनमें भामह ,दंडी केषवदास आदि आचार्य आते हैं। केषवदास कहते हैं।

"जदयपि सुजति सुलच्छणी ,सुबरण सरस सवृत्त ।
भूषण बिनु न बिराजई ,कविता बनिता मित्त "

अर्थात कविता की जाति अच्छी हो उसमें प्रयुक्त वर्ण (अक्षर)उत्तम हो ,परंतु अगर वह अलंकारों से रहित हो तो वह शोभा नहीं देती।

1. डॉ. सभापती मिश्र:-

अलंकार को काव्य की आत्मा न मानने पर भी काव्य में अलंकार के महत्व की उपेक्षा नही की जा सकती । भावावेश की भाषा में अलंकारों का समावेश अपने आप हो जाता है। अलंकारों द्वारे अर्थगांभीर्य – सुनिश्चित होता है तथा कवि अपनी बात सफलतापूर्वक अभिव्यक्त करने सफल होता है।

जब कवि अपने आप को अपने भावोंको प्रकट करने में असमर्थ पाता है तब वह उस वर्णन शैली का आधार लेता है जिसे अलंकार नाम से जाना जाता है। रसवादी आचार्य अलंकारों को अनिवार्य मानते है। उनके अनुसार -

"नही मुहताज जेवर जिसे खुबी खुदा ने दी "
वे **कबीर** काव्य का उदाहरण देते हैं।

"जलमें कुम्भ कुम्भ में जल बाहर भीतर पानी ।
फूटा कुम्भ जल ही समाना यह तथ्य कहयों ज्ञानी ।। "

इस उदाहरण में अलंकारोंके बिना ही कबीर बहुत बडी बात प्रभावी रूप से कह जाते हैं। अलंकारों का प्रयोग होना भी नहीं चाहिए यह मानना भी गलत है। इन दोनों पक्षों में समन्वय करके इस समय कहा जाएगा कि काव्य में अलंकारों का प्रयोग सहज और सुदंर रूप में होना चाहिए। जैसे प्रसाद ने किया है

"नील परिधान बीच सुकुमार,
खुल रहा जो मृदुल अधखुला अंग।
खिला हो जो बिजली का फूल
मेघ बन बीच गुलाबी रंग ।।"

निसंदेह अलंकार काव्य में चमत्कार उत्पन्न करते हैं। परंतु यह बात कभी भूलनी नहीं चाहिए कि पे साधन है साध्य नहीं। अलंकारों का काव्य में महत्वपूर्ण स्थान निश्चित है पर वे काव्य के मूलतत्वों का स्थान कभी नहीं ले सकते हैं।

निष्कर्ष:-

सारांश रूप में हम कह सकते हैं कि काव्य में अलंकार का महत्व अनन्य साधारण होता हैं। आचार्यों का मत यहॉ तक है कि "अलंकार रहिता विधवैव सरस्वती "अलंकार के बिना सरस्वती भी विधवा के समान दिखाई देती है। इसलिए काव्य बिना अलंकार के काव्य भी नीरस अशोभनीय लगता है इसलिए काव्य में अलंकार का महत्व होता है।

संदर्भ ग्रंथ:-

1. भारतीय एवं पाश्चात्य काव्यषास्त्र
संपादक :- डॉ. सुरेशकुमार जैन
प्रा. महावीर कंडारकर
2. काव्यशास्त्र : विविध आयाम
संपादक :- डॉ.मधु खराटे